ताम्रयुगीन संस्कृति की चर्चा (Discussion on the Culture of the Chalcolithic Age)

ताम्रयुग या Chalcolithic Age मानव सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था, जिसमें पत्थर युग की सादगी और धातु युग की तकनीकी प्रगति — दोनों के तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इस युग में मनुष्य ने तांबे के साथ-साथ पत्थर के औजारों का भी प्रयोग किया, इसलिए इसे ताम्र-पाषाण युग (Copper-Stone Age) भी कहा जाता है। इस काल की संस्कृति मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं — जैसे सामाजिक संगठन, आर्थिक व्यवस्था, कला, धर्म और निवास पद्धति — में नए आयामों की शुरुआत का प्रतीक थी।

1. आर्थिक जीवन

ताम्रयुगीन संस्कृति का प्रमुख आधार कृषि थी। इस युग के लोग गेहूँ, जौ, चना, मसूर आदि फसलें उगाते थे। कुछ क्षेत्रों में कपास की खेती के प्रमाण भी मिले हैं। पशुपालन भी जीवन का अभिन्न अंग था — लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी और सूअर पालते थे। तांबे के औजारों और उपकरणों के प्रयोग से खेती अधिक प्रभावी हुई, जिससे अधिशेष उत्पादन संभव हुआ। यही अधिशेष वस्तुओं के विनिमय और व्यापार का आधार बना। ताम्रयुगीन समाज में हस्तशिल्प भी विकसित हुआ, जिसमें मिट्टी के बर्तन, मनके, आभूषण और वस्त्र निर्माण प्रमुख थे।

2. निवास और बस्तियाँ

ताम्रयुगीन बस्तियाँ प्रायः नदियों के किनारे स्थित थीं, जिससे जल की सहज उपलब्धता बनी रहती थी। घर प्रायः कच्ची ईंटों या मिट्टी से बनाए जाते थे। कुछ स्थलों पर एक या दो कमरों वाले घर मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि पारिवारिक जीवन की नींव मजबूत हो चुकी थी। बस्तियों की योजना सरल थी, परंतु सामुदायिक जीवन की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है।

3. कला और शिल्प

इस युग की कला में सादगी के साथ-साथ सौंदर्यबोध भी देखा जा सकता है। मिट्टी के बर्तनों पर लाल, काले या भूरे रंगों से ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई जाती थीं। ये चित्र उस समय के सौंदर्य-संवेदन और रचनात्मकता को दर्शाते हैं। इसी तरह तांबे से बने औजार, जैसे — कुल्हाड़ी, छुरा, भाला, सुई और आभूषण — तकनीकी कौशल के उदाहरण हैं। कुछ स्थलों से मनके, माला, और सीप के आभूषण भी मिले हैं, जो सौंदर्य के प्रति लोगों की रुचि को प्रकट करते हैं।

4. सामाजिक और पारिवारिक जीवन

ताम्रयुगीन समाज में पारिवारिक संगठन की स्पष्ट रूपरेखा मिलती है। अधिकांश परिवार संयुक्त रूप में रहते थे और कृषि कार्य सामूहिक रूप से करते थे। स्त्रियाँ घरेलू कार्यों और शिल्पकला में भाग लेती थीं। समाज में वर्ग विभाजन की प्रारंभिक झलक भी मिलने लगती है, क्योंकि धातु, व्यापार और कृषि से जुड़े लोग अपनी-अपनी भूमिकाओं में विशिष्ट बनते जा रहे थे।

5. धार्मिक जीवन

ताम्रयुगीन लोगों की धार्मिक आस्थाएँ प्रकृति से जुड़ी थीं। वे सूर्य, चंद्रमा, जल, अग्नि जैसी प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे।

कुछ स्थलों से महिला मूर्तियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिन्हें उर्वरता (fertility) की देवी के रूप में पूजा जाता था। यह उस समय की मातृप्रधान (matriarchal) धार्मिक प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है।

6. मुख्य ताम्रयुगीन संस्कृतियाँ

भारत में ताम्रयुगीन संस्कृति के कई क्षेत्रीय रूप विकसित हुए जिनमें निम्नलिखित प्रसिद्ध हैं –

आहर संस्कृति (राजस्थान): यहाँ से तांबे के औजार और लाल-सफेद चित्रित मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

जोरवे संस्कृति (महाराष्ट्र): कृषि, पशुपालन और मृद्भांड कला के लिए प्रसिद्ध।

मालवा संस्कृति (मध्य प्रदेश): सुव्यवस्थित बस्तियों और धातु प्रयोग के लिए जानी जाती है।

नवदातोली संस्कृति (नर्मदा घाटी): यहाँ से सुंदर सजावटी मिट्टी के बर्तन और तांबे के औजार मिले हैं।

इन सभी संस्कृतियों में समान तत्व – जैसे कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार, और धार्मिक प्रतीक – स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि उस समय भारत के विभिन्न भागों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान हो रहा था।

7. सांस्कृतिक महत्व

7. सांस्कृतिक महत्व

ताम्रयुगीन संस्कृति ने मानव सभ्यता को तकनीकी दृष्टि से सशक्त बनाया। यह युग पत्थर युग और लौह युग के बीच संक्रमण का सेतु था, जिसने आगे चलकर नगरीकरण और प्राचीन सभ्यताओं (जैसे हड़प्पा) के विकास के लिए आधार तैयार किया। इस काल में मानव ने न केवल प्रकृति को समझा, बल्कि उसे अपने हित में उपयोग करना भी सीखा।

निष्कर्ष:

ताम्रयुगीन संस्कृति मानव सभ्यता के इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। इसने मानव को कृषि, धातु विज्ञान, कला, और सामाजिक संगठन की दिशा में अग्रसर किया। यह संस्कृति मानव के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला बनी, जिसने आगे चलकर उन्नत सभ्यताओं के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।